अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)

डॉ सुधा अरोड़ा के कथा साहित्य में स्त्री चेतना

शोधार्थी:- कुमारी राजश्री पांडुरंग नामये
(मुंबई विश्वविद्यालय)

शोध निर्देशिका :-डॉ. श्रीमती माधुरी जोशी
(एसोसिएट प्रोफेसर ,महाराष्ट्र शासनाचे इस्माइल युसुफ महाविद्यालय)

शोध सार

इस आधुनिक काल में भी स्त्री अपने वर्चस्व की लड़ाई लड़ रही है। नारी भी शारीरिक सुख चाहती है जो कि उसके जन्मसिद्ध अधिकार में आती है। स्त्री भी सम्मान के साथ जीना चाहती है। लेकिन समाज के बनाये कायदे-कानून इतने जटिल होते है कि स्त्री को दासता स्वीकार करनी ही पड़ती है। बिना मूल्य के श्रमिक की तरह शारीरिक, मानसिक सेवाएँ देनी पड़ती है। शील और पवित्रता की रक्षा के लिए स्त्री को नैसर्गिक इच्छाओं का दमन करना ही पड़ता है। स्त्री मानसिक झंझावतों को झेलती रहती है और परिवार में सुख-शान्ति कायम रखने का प्रयत्न करती रहती है। सामाजिक परिवेश में सुलह व समझौता ही स्त्री का उत्तम चरित्र कहलाया जाता है। जो स्त्री अपने स्व के लिए नियम नहीं अपनाती वह सुरक्षा के लिहाज से अकेली ही मानी जाती है।

कुंजी शब्द : **स्त्री चेतना, सामाजिक, परिवार**

प्रस्तावना

समय के अन्तराल में समाज में काफी परिवर्तन देखने को मिल रहा है। चाहे वह किसी भी क्षेत्र में हो। स्त्री की प्रगति में सुधार होता तो दिखाई दे रहा है, लेकिन समस्याएँ नए सिरे से उत्पन्न भी होती जा रही हैं। लैगिंग भेदभाव, कुपोषण, यौन उत्पीड़न, दहेज प्रथा, राजनीति क्षेत्रों में महिलाओं की निम्न भागीदारी आदि समस्याएँ आज के कथा साहित्य का मूल विषय बन रही है। शहरी क्षेत्रों के साथ ही साथ ग्रामीण स्त्री में भी चेतना का विकास हुआ है। जागरण के इस युग में ग्रामीण नारी भी अधिकारों

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)

के बारे में सोचने लगी है। पुरुष के समान ही नारी भी आर्थिक, सामाजिक तथा राजनैतिक क्षेत्रों में बराबरी का स्थान पाने की आकांक्षा जागने लगी है। वह पुराने नियमों व रूढिवादी परम्पराओं से बाहर निकल रही है।

जैसे-जैसे समय के साथ समाज में नारी की निरीह स्थिति में बदलाव आया है और वह अबला स्त्री से सबला स्त्री बनने की तरफ अग्रसर हुई है, वैसे-वैसे स्त्री अपने अधिकारों के प्रति सजग और सचेत भी हुई है। अहंकारी और सामंती पुरुष को हराने का और बदलने का यही एक तरीका है कि रोना धोना बंद कर औरत उसके हर औजार को निरस्त कर दे। जो कभी पांवों पर गिरी रहती थी, जिस दिन वह उठकर अपने पैर पर खड़े होना सीख जाती है और जिस दिन आर्थिक और भावनात्मक आश्रय से निकलकर अपने लिएएक स्पेस बना लेती है और पति को सैडिस्ट होने का आनंद देना बंद कर देती है, पुरुष का पूरा मकसद ही डिफ्यूज हो जाता हैं|

आज स्त्री पढ़-लिखकर जागरूक हो गई है। बेशक इसमें दुविधा की कोई गुंजाइश नहीं है कि पहले वाली सहनशीलता और त्याग वाली भूमिका को वे अब गहिमामंडित नहीं करती और अपने आत्मसम्मान और अस्मिता के बरबक्स स्थितियों को पहचानने लगी है|

आज चुनौतियों का सामना करने वाली स्त्री आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ती है और पुरुष से यह अपेक्षा करती है कि वह उसके कार्य और आजादी में दखल नहीं देगा। वह स्पष्ट कहती है 'अगर मैंने देखा के तुम्हारे रहने के कारण मेरी आजादी में कमी आ रही है तो मैं तुम्हें छोड़ दूँगी किसी कानून या कायदे का दामन पकड़े बगैर फौरन, एक झटके के साथ, जैसे कोई किसी काँटे को निकाल दे| यह नारी चेतना का ही रूप है कि आज वह अपनी इच्छा शक्ति और अधिकारों को पहचान अपने जीवन के फैसले स्वयं करने का सामर्थ्य रखती है। वह पुरुष समाज के अन्याय, अत्याचार को चुप-चाप सहन नहीं करती वरन परिस्थिति के अनुरूप उसका मुकाबला भी करती है।

आज नारी अपने प्रति जागरुक हो चुकी है। वह घर की नहीं बल्कि घर के बाहर भी पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिला कर काम कर रही है। व्यक्ति स्वतंत्रता की अपूर्व चेतना के इस युग में नारी अपने

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)

स्वतंत्र अस्तित्व के प्रति न्याय की माँग कर रही है। आधुनिक नारी ने अपने स्वतंत्र चिंतन एवं व्यक्तियता को सुरक्षित रखते हुए इस पुरुष प्रधान समाज के सामने सफलतापूर्वक अपनी स्थिति स्पष्ट ही नहीं की बल्कि अपने 'स्व' को जागरुक रखते हुए समाज में अपना एक विशिष्ट व्यक्तित्व कायम किया है। बरतों पुरुषों के कठोर यन्त्रणापूर्ण नियन्त्रण में रहने के पश्चात आज नारी अपने आप को स्वतंत्र अनुभव करती है। लेकिन इस सच्चाई से विमुख नहीं हुआ जा सकता कि अभी यह स्वतंत्रता आधी आबादी के सीमित वर्ग तक ही उपलब्ध हो सकी है। समाज में स्त्री शोषण, समस्याएं आज भी हैं, जहाँ स्त्री पुरुष वर्चस्व पारिवारिक और सानाजिक रूढि का विरोध कर रही है।

आज साहित्य का ज्वलंत मुद्दा स्त्री-विमर्श है। बीसवीं सदी के मुक्ति आंदोलनों में स्त्री मुक्ति आंदोलन सबसे अधिक व्यवहारिक और सार्वभौमिक रहा है क्योंकि वह दुनियाँ की आधी आबादी के स्वत्व से जुड़ा आन्दोलन है।

स्त्री-विमर्श के मानवीय सरोकार ने सदियों से चली आ रही स्त्री की स्वत्वहीनता को गहरे मानवीय अर्थ दिये हैं और खामोशी को तोड़ा है। स्त्री-विमर्श ने पैतृक मूल्यों, वर्जनाओं और मापदंडों पर विचार-विश्लेषण किया है। इस विमर्ष ने स्त्री की समस्याओं, प्रश्नों तथा उन तथाकथित नैतिक सामाजिक मूल्यों, पैतृक व्यवस्थाओं को छिन्न-भिन्न किया है जो स्त्रियों की चेतना को अनुकूलित करते हैं। ऐसे प्रश्नों ने स्त्री-विमर्ष को सार्थक और प्रासांगिक बना दिया है। स्त्री मुक्ति के सर्जनात्मक संकल्प से परिपूर्ण स्त्री-विमर्श अपने भीतर मनुष्य होने की पहचान तथा मानवीय अस्मिता को खोजने और प्रतिष्ठित करने का संघर्ष है। इस संघर्ष का एक सशक्त मोर्चा साहित्य है। साहित्य की अनेक विधाएं नाटक, उपन्यास, कहानी, आदि ने इस विमर्श पर किसी न किसी रूप में विचार किया है।

सामाजिक-संरचना, पारिवारिक संरचना, आर्थिक साधनों पर वर्चस्व और उनके वितरण तथा वितरण से प्राप्त पूंजी के स्वामित्व की स्थिति जब तक नहीं बदलेगी, तब तक स्त्री मुक्ति सम्भव नहीं। व्यवस्था बदलेगी तब स्त्री पुरुष के सम्बन्धों का आधार बदलेगा, उसकी भूमिका बदलेगी, सामाजिक और पारिवारिक संरचना बदलेगी। घर के अन्दर और बाहर स्त्री की सत्ता का रूप बदलेगा

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)

उसकी वास्तविक छवि का निर्माण होगा। इसके लिए पूरी की पूरी सामाजिक सोच, सांस्"तिक संरचना में परिवर्तनों का होना बेहद जरूरी है। लेकिन प्रश्न यह है कि सामाजिक परिवर्तन, सांस्"तिक-बदलाव, प्रजातान्त्रिक मूल्यों और व्यक्ति के मानवाधिकारों को लगातार बदला जा सकता है।"

सुधा जी ने अपने कथा साहित्य में पितृसत्ताकता के घेरे में बंधे स्त्री जीवन के अलग-अलग चरित्रों का चित्रण किया है। पिता के घर विशाखा अपने लिये मुट्ठी भर आसमान खोजती है, दूसरे उपन्यास में चित्रा अपने ही घर अपने वजूद को तलाशती है। स्त्री अपने ही घर मैं एक छाया सी बनकर रह जाती है। उसे उसका 'अस्तित्व' कही दिखाई नहीं देता विशाखा के रुप में जो विद्रोह का स्वर बुलंद होता है। वह दूसरे उपन्यास में चित्रा के रुप में अपनी त्रासदी को अपने बच्चे की धीमी मौत में देखकर विद्रोह का स्वर ठंडा हो जाता है।स्त्री के जीवन की बेबसी को उपन्यास के माध्यम से व्यक्त किया है। उसके जीवन का कड़वा सच सामने लाने का प्रयास है।

साठ-पैंसठ साल पहले तक महिलाओं की सामाजिक स्थिति पर, उनके सशक्तिकरण, उनकी उपलब्धियों और संघर्षों पर, उनके रचे साहित्य और अवधारणाओं पर गंभीरता से चर्चा नहीं की जाती थी। महिला लेखन को बहुत सम्माननीय दर्जा प्राप्त नहीं था और जो दो-चार महिलाएँ रचनाएँ करती भी थीं, उन्हें घर के सीमित दायरे की सीमित समस्याओं के घेरे में रचा लेखन मानकर या घर बैठी 'सुखी महिलाओं का लेखन' मानकर या तो गंभीरता से नहीं लिया जाता था या एक आरक्षित रियायत दे दी जाती थी कि आखिर तो इनका दायरा छोटा है, परिवेश सीमित है तो बड़े फलक के मुद्दे कैसे उठाएँगी।

स्त्रियों पर जो भी चर्चाए हुईं, वे पुरुषों ने कीं, चाहे वह सामाजिक सरोकारों के मद्देनजर हो या सहानुभूति से। स्त्री चरित्रों को लेकर पुरुष रचनाकारों का एक अपना नजरिया और अपना आकलन था। प्रेमचंद, अज्ञेय, जैनेन्द्र ने बेहद जीवंत स्त्री पात्र अपने उपन्यासों, कहानियों में रचे। ज्योतिबा फुले, महात्मा गाँधी, राममनोहर लोहिया, बाबासाहेब आंबेडकर के स्त्री संबंधी सरोकारों से सभी

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)

परिचित हैं। पर यह स्थिति पिछले दो दशकों से विश्व के हर क्षेत्र में देखी जा रही हैं कि स्त्रियाँ अपने बारे में स्वयं अपने को विषय बना कर चर्चा कर रही हैं, अपनी समस्याओं से जुड़े अपनी तरह से उठा रही हैं।

लेखिका सुधा अरोडा ने बड़ी सहजता से उन तमाम विसंगतियों को परत दर परत उघाडा है, जिनके कारण नव विवाहिताएँ संघर्ष कर रही हैं। आज के समय में हम इक्कीसवीं सदी में जी रहे हैं। भले ही हम नयी सदी में प्रवेश कर गए हैं, भले ही जमाना बदला है, नयी तकनीक की वजह से रहन सहन के नये

तौर तरीके बदले हैं, स्त्री आज बाहर कमाने लगी है, वह आर्थिक रूप से आजाद हुई है, लेकिन अगर कुछ नहीं बदला है, तो वह है 'पितृसत्तात्मक समाज में स्त्रियों की मानसिक गुलामी। मानसिक रूप में स्त्री आज भी उतनी ही कमजोर है, जितनी उन्नीसवीं बीसवीं सदी में थी। उसकी इस तरह की कमजोरी का कारण है उसे विरासत में मिले उसके संस्कार। यह कहानी इसी संस्कार के गुलाम नवविवाहिता के पीडा एवं दर्द के इन्तहा की कहानी है।'

पारिवारिक जीवन एक सहचर्य, तालमेल और सामंजस्य की माँग करता है, जिसमें पति और पत्नि दोनों की बराबर की हिस्सेदारी एक अनिवार्यता है। अगर यह स्थिति नहीं है तो इसे बातचीत द्वारा या खुलकर इस समस्या के हर कोण पर समय रहते चर्चा की जानी चाहिए, वरना जिन बच्चों का भविष्य संवारने के लिए एक औरत अपनी पूरी जिंदगी होम कर देती है, उसका सबसे बड़ा खामियाजा अंतत बच्चे ही भुगतते दिखाई देते हैं।

आर्थिक आत्मनिर्भरता बेशक प्रताडना की स्थिति में कोई बदलाव ला पाने में कारगर नहीं होती है पर इससे जीवन में निर्णय लेने और उन्हें कार्यान्वित करने की क्षमता जरूर बढ़ जाती है बहुत से समीकरण इस आर्थिक आजादी के चलते बदल जाते हैं आर्थिक रूप से सक्षम होने का, एक मध्यमवर्गीय औरत को यह लाभ जरूर मिलता है कि गैर-बराबरी और मानसिक यातना से पैदा होती भीषण स्थितियों से जूझना उसके लिए थोड़ा सा आसान हो जाता है। जो आर्थिक रूप से पूरी तरह पति

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)

की कमाई पर आश्रित रूप से पराश्रित होने के कारण उपजी स्थितियों से या वैवाहिक जटिलताओं से पूरी तरह ढह जाती है। और अपने को समेट पाना उनके लिए मुश्किल हो जाता है वहीं आर्थिक आजादी के बूते पर, आत्मनिर्भर स्त्री के लिये, हिंसा या पति के अंतर्संबंधों से उपजी जटिल स्थितियों के भीषण स्वरूप की तीव्रता कुछ कम हो जाती है।

वह अपने जीवन के नक्शे को फिर से अपने सामने फैलाकर सुनियोजित कर सकती है। मानसिक गुलामी से बाहर आना उसके लिये आसानी होता हैं उसके सामने चुनाव की सुविधाएँ और जीने के विकल्प अपेक्षाकृत अधिक होते है इसलिए आर्थिक आजादी हर औरत के लिए सम्मान के साथ जीने की पहली शर्त है।

इसके लिए सबसे पहली जरूरत इस बात की है कि हर औरत अपने होने और अपने जीने को पहली प्राथमिकता दे। पति और बच्चों के प्रति अपनी पूरी जिम्मेदारी निभाते हुए भी हमेशा अपने लिए थोडी सी स्पेस जरूर रखनी चाहिए।

हमारी पीढ़ी की औरते आज भी युवा पीढ़ी की लड़कियों के लिए चिंतित होती है कि आज तलाक की संख्या बहुत अधिक बढ़ गई है। पुरूष प्रधान समाज में अकेले रहना बहुत आसान नहीं होता। अकेली लड़की को किराए पर घर नहीं मिलता। अकेली औरत को हर पुरुष गलत नजर से देखता है। इसलिए पिछली पीढी की औरतें सोचती है भूखे भेड़िये की जमात में अकेले अपने को ससम्मान बचाकर रखना मुश्किल होगा इसलिए बेहतर है हम एक पुरूष की ज्यातदी सह लें पर विवाह की शुचिता और सुरक्षा के दायरें में बनी रहें। दरअसल यह सोच है नहीं कि बराबरी और सौहार्दपूर्ण वातावरण में भी विवाह संबंध पनप सकता है। जहां पति-पत्नि दोनों को एक-दूसरे को सम्मान दें। प्रेम, समझदारी, बराबरी और सम्मान के साथ एक तनावरहित स्वस्थ संबंध जीवन को कितना तरल और सुखद बना सकता है, यह हमारी कल्पना में है नहीं। ऐसे संबंध को प्यार का नाम दे देते हैं। जहाँ एक पक्ष शासन करता है और दूसरा पक्ष नियंत्रण में रहता है। नियंत्रण और शासन तले दबे पक्ष का डर के साये तले रहना स्वाभाविक है। ऐसे में अगर युवा पीढ़ी की लड़कियाँ अपना पूरा जीवन इस शासन और नियंत्रण के

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)

तले बिताने को अस्वीकार कर जीने का एक स्वतंत्र रास्ता तलाशती है तो तलाक की ओर उनके बढ़ते कदमों से खौफ खाने की जरूरत नहीं है। बराबरी और सम्मान की आकांक्षा की ओर बढ़ती इस ललक को सही परिप्रेक्ष्य में देखने की आवश्यकता है|

'रहोगी तुम वहीं ' के पूरक के रूप में कहानी 'सत्ता संवाद' फिर से संवाद शिल्प में लिखी गई है। सत्ता संवाद को रहोगी तुम वही कहानी का विस्तार माना जा सकता है। जहाँ एक कमाऊ औरत बोल रही है और उसका कवि-कलाकार पति चुप है। सब औरते नहीं बोलती, नहीं बोल सकती। जो घर चलाकर स्वयं खटकर निखट्टुओं को खिलाएगी, वह बोलेगी भी। यह खटकर खिलाना ही उसके बोलने का आधार है। कारण है औरत सिर्फ तभी बोलती है जब उसकें पास अर्थ की ताकत हो, अर्थसत्ता हो। स्त्री का आर्थिक रूप से स्वंतत्र होना ही सामाजिक बदलाव की पहली शर्त है।

उसकी आर्थिक आत्मनिर्भरता से बहुत सारे समीकरण बदल जाते है। स्त्री का आर्थिक रूप से स्वतंत्र होना उसमें आत्मविश्वास ही नहीं जगाता, कोई भी पक्ष अगर नियंत्रण करना चाहेगा तो पारिवारिक संगति में असंतुलन होना स्वाभाविक है।आज की नारी समझ चुकी है कि परम्परागत बंधन उसके व्यक्तित्व को संकुचित करते हैं|

निष्कर्ष :

नारी के संघर्ष का स्वरूप बहुत अधिक बदल गया है, बस नहीं बदली है तो स्त्री के संघर्ष की प्रकृति। उन्होंने कहा कि यह संघर्ष दोहरा तिहरा नहीं, चहुंमुखा है और लंबा भी, जो बहुत जल्दी समाप्त होने वाला नहीं है, यह चल रहा है और आगे भी चलेगा।

सुधा अरोड़ा जी कहती है कि सकारात्मक ऊर्जा, शक्ति, प्रकृतिगत लचीलेपन और दूरदर्शिता ही स्त्री की स्थितियों को बदल पाने में सक्षम होगी, किसी भी प्रगतिशील समाज के विकास और उन्नति के लिए यह जरूरी भी है। उन्होंने अपनी दो बहुचर्चित कहानियों 'रहोगी तुम वही' तथा 'सत्ता संवाद' में पितृसत्तावादी का काफी अच्छा वर्णन किया है। कहानी में उन्होंने कहा कि तुमने अपना यह हाल कैसे

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)

बना लिया? चार किताबें लाकर दीं तुम्हें, एक भी तुमने खोलकर नहीं देखी... ऐसे ही बीवियों के शौहर फिर दूसरी खुले दिमागवाली औरतों के चक्कर में पड़ जाते हैं और तुम्हारे जैसी बीवियाँ घर में बैठकर टसुए बहाती है।

संदर्भ सूची:

1. एक औरत की नोटबुक सुधा अरोडा पृ. 34

2. डॉ. अमर ज्योति, महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारीवादी २ष्टि, पृ 41

3. एक औरत की नोटबुक सुधा अरोड़ा राकमल प्रकाशन पृ.१ मुम्बई

4. सुधा अरोड़ा, औरत दो चेहरे,सत्ता संवाद, सुधा अरोडा, कांसे का गिलास पू. 110

5. सुधा अरोडा, कांरो का गिलास पृ. 111

6 द हिन्दू 30 मार्च 2008 'द वायलेस ऑफ सायलेस